नया संस्करण

गर्ल्स आर्मर

अंक 04

06

नैंसी त्यागी : क्वीन ऑफ कान फेस्टिवल

मां की सिलाई मशीन से कान फिल्म फेस्टिवल तक: नैंसी त्यागी की संघर्ष, जुनून और सफलता की प्रेरणादायक यात्रा

गर्ल्स आर्मर

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय पाठक,
गर्ल्स आर्मर मैगजीन के तीसरे संस्करण को जो प्यार आपने दिया, हम उसके लिए कृतज्ञ हैं. आपके दुलार की उम्मीद में चौथे संस्करण को भी प्रकाशित कर रहे हैं. बहरहाल.

इस संस्करण में हम आपको नैंसी त्यागी के जीवन में ले चलेंगे. कान फिल्म फेस्टिवल से सुर्खियों में आई नैंसी की कहानी सुनना इसलिए भी जरूरी हो जाता है, क्योंकि यह कहानी लाखों भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है. उत्तर प्रदेश के गांव से आने वाली नैंसी त्यागी, कैसे कान फिल्म फेस्टिवल के रेड कारपेट तक पहुंची. कैसे UPSC करने आई यह लड़की सोशल मीडिया स्टार बनी, हम सब कुछ आपको सुनाएंगे. भारतीय नारीवादी श्रृंखला में आप पढ़ेंगे पंडिता रमाबाई को, जिन्होने धर्म की खाल ओढ़े पितृसत्ता को उजागर कर दिया. आप जानेंगे कि कैसे संस्कृत की इस विदुषी ने अपने तर्क शक्ति से पितृसत्ता के पहरेदारों को उन्ही के मैदान में हराया. इनको पढ़ते हुए आप 19वी शताब्दी के सुधारवादी आंदोलनों के संसार का भी स्पर्श करेंगे. अनामिका की कविता पढ़ते हुए आप साथी गोविंद की लापता लेडीस पर लिखे फिल्म रिव्यू से भी गुजरेंगे. इस रिव्यू में फिल्म की नारीवादी आलोचनाएं भी शामिल हैं. मसलन फूल का इंतजार और मंजू माई की उदासी. साथी जयदीप ने भी हीरा मंडी के बहाने भारतीय तवायफों पर बहस छेड़ी है. बड़े ही संक्षिप्त ढंग से बहस के कमोबेश तमाम पक्षों को समावेश करते हुए, इस लेख को लिखा गया है. साथी योगेश से आप ओवेरियन सिस्ट और असामयिक यौवन के विभिन्न आयामों को भी जानेंगे.

सेहत और इन'वे्शन् की बातें लिए शब्द भी आपको अंदर पन्नो पर अंकित मिल जाएंगे. इस संस्करण से मैगजीन में एक नया विषय जोड़ा गया है, जिसमें हम LGBTQ+ के मुद्दों पर प्रकाश डालेंगे. इस विषय का पहला लेख प्राइड मंथ पर लिखा गया है. इसके इतिहास और भारत में इसकी शुरुआत पर चर्चा की गई है.

अभिषेक श्रीवास्तव
प्रधान संपादक

अस्वीकरण

गर्ल्स आर्मर पत्रिका ने यह सुनिश्चित करने के लिए एक निरंतर देखभाल की है कि सामग्री प्रकाशन की तारीख पर सटीक है। लेखों में व्यक्त विचार लेखक के विचारों को दर्शाते हैं और जरूरी नहीं कि प्रकाशक और संपादक के विचार भी हों। प्रकाशित सामग्री, विज्ञापन, संपादकीय और अन्य सभी सामग्री एक अच्छे विश्वास में प्रकाशित किए गए है। गर्ल्स आर्मर पत्रिका इन लेखों के कारण होने वाली किसी भी तरह की हानि या क्षति के लिए किसी भी दायित्व की गारंटी और उसे स्वीकार नहीं करता है।

गर्ल्स आर्मर की पत्रिका बिक्री के लिए नहीं है

विषय

06 **नैंसी त्यागी**
ट्रोलिंग से रेड कार्पेट तक

08 **लापता लेडीज फिल्म रिव्यू**
कहानी उनकी जो हो के भी हैं लापता

10 **पंडिता रमाबई**
दमितों की नायिका'मुक्ति मिशन' की स्थापिका

12 **हिंदुस्तानी समाज में तवायफ़ें**
कभी संगीत की फ़नकार, आज समाज की दुत्कार

14 **ओवेरियन सिस्ट**
लक्षण जांच और इलाज़

16 **असामयिक यौवन**
समय से पहले पीरियड्स

गर्ल्स आर्मर टीम

संस्थापक और निदेशक
अभिषेक यादव

निदेशक
आलिया खान

मुख्य संचार अधिकारी
भानु प्रताप सिंह लोधी

प्रधान संपादक
अभिषेक श्रीवास्तव

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
जीतेन्द्र सिंह यादव

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी
अदीबा शेख

मुख्य संचार अधिकारी
शुभ जैन

चार्टर्ड एकाउंटेंट
पारस नाथ चौहान

सेक्रेटरी कंपनी
दीपक सेठ

सदस्य, किर्गिज़स्तान
सुयश शर्मा

सदस्य, हरदा
अन्वेषा शर्मा

सदस्य, दिल्ली
नम्रता लोधी

सदस्य, बूंदी
आर्या सैनी

सदस्य, गुना
अंशिका परमार

मरने की फ़ुरसत

ईसा मसीह
औरत नहीं थे
वरना मासिक धर्म
ग्यारह बरस की उमर से
उनको ठिठकाए ही रखता
देवालय के बाहर!

बेथलेहम और यरूशलम के बीच
कठिन सफ़र में उनके
हो जाते कई तो बलात्कार
और उनके दुधमुँहे बच्चे
चालीस दिन और चालीस रातें
जब काटते सड़क पर,
भूख से बिलबिलाकर मरते
एक-एक कर—
ईसा को फ़ुरसत नहीं मिलती
सूली पर चढ़ जाने की भी!

अनामिका

विशेष धन्यवाद

लेखक
सुयश नगाइच

लेखक
जयदीप दिनकर

लेखक
गोविंद राज

लेखक
योगेश शर्मा

प्राइड मंथ

|अभिषेक श्रीवास्तव |

प्राइड मंथ औरतों की दुनिया मुख्य धाराकी सड़क से दूर है. लेकिन समलैंगिकों का जिक्र तो मील के पत्थरों पर तक नहीं है.इनकी चर्चाएं या तो समाज में हुई नहीं, अगर हुई भी तो नाक मुँह सिकोड़ कर गाली केसाथ. जब दुनिया भर के नारीवादी आंदोलन समलैंगिकों के मुद्दों के साथ आगे बढ़ रहेहैं, फिर ऐसे में मैगजीन इस बहनापा से दूर क्यों रहे. तो आइए शुरुआत करते हैं,प्राइड मंथ के साथ, जानते हैं कि आखिर कैलेंडर के छठे महीने को प्राइड मंथ के रूपमें क्यों मनाया जाता है. जून महीने में LGBTQ+के समान अधिकारों के पक्षधर सड़कों पर रैलियांनिकालते हैं. हाथों में सतरंगी झंडे, आँखों में अधिकारों की मांग और दिलों में अपने जेंडर के लिए फक्र लिए यह लोगइंसान होने का हक चाहते हैं. इंसान होना हर आदमी को हासिल नहीं, बिना प्रेम के यह मुमकिन भी नहीं. इसलिए यह लोगप्रेम करने का हक चाहते हैं. इनका नारा भी है- लव इज लव, यानी प्यार, प्यार है. इनकीमांगों और आंदोलन पर बात हम अगले संस्करण में करेंगे फिलाल इस प्राइड मंथ के इतिहासऔर महत्व को समझते हैं. प्राइड मंथ भले ही आजमुंबई, पूने और दिल्ली जैसेशहरों में रमता दिख जाएगा, लेकिन इसकी जड़ेंअमेरिकी गे आंदोलन की जमीन में धसी हैं. साल 1969 के जून महीने का 28 वा दिन,न्यू योर्क शहर केलोकप्रिय गे बार स्टोनवॉल इन पर पुलिस की छापेमारी होती है. उस समय के लिए यह कोईअसामान्य बात नहीं थी. लेकिन यह छापेमारी युगांतरकारी साबित हुई, क्योंकि इस छापेमारी की जवाबी कार्यवाही हिंसकविरोध प्रदर्शन के रूप में जाहिर हुई. इन प्रदर्शनों को स्टोनवॉल दंगो के नाम सेजाना जाने लगा. यह प्रदर्शन कई दिनों तक चले और इन को हवा देने का श्रेय मार्शा पी.जॉनसन , सिल्विया रिवेरा और स्टॉर्म डेलार्वेरी जैसे गे एक्टिविस्टोंको दिया गया. इन प्रदर्शनों के उपलक्ष्यमें एक साल बाद, अमेरिका के कईशहरों में पहली प्राइड मार्च निकाली गई. इन पहले मार्चों में से कुछ के आयोजकफ्रेडसार्जेंट ने कहा था कि यह पहले मार्च उत्सव से ज्यादा विरोध प्रदर्शनहैं. इन मोर्चों का लक्ष्य स्टोनवॉल दंगोंको याद करना और समलैंगिक मुक्ति के लिए आगे बढ़ना है. भले ही आज LGBTQ+ आंदोलन दुनिया की हर शोषित अस्मिता के साथ खड़ाहै, चाहे फिर वो फिलिस्तीन होया भारतीय मुसलमान पर शुरुआती मार्च से बड़े पैमाने पर ट्रांसजेंडर महिलाओं औरकाली चमड़ी की महिलाओं को बाहर रखा गया था. गौरतलब हो कि इस गे मार्च को समूची LGBTQ+की प्राइड बनने में अल्पकाल लगा. स्टोनवॉल दंगों और पहले प्राइज परेड के बाद,LGBTQ+ आंदोलन में फुर्ती आई,समलैंगिक समूहों की संख्या में भी वृद्धि दर्जकी गई. कुछ वर्षों के बाद यह प्राइड आंदोलन पूरे अमेरिका में फैल गया. दुनिया भरके प्रमुख शहरी क्षेत्रों में अमूमन प्राइज परेड जून में आयोजित की जाती है,लेकिन कुछ शहरों में अलग-अलग समय पर आंशिक रूप इसका जश्न और विद्रोह होता है. मसलनदिल्ली में ही 2009 के बाद सेदिल्ली क्वीर प्राइड परेड प्रति वर्षनवम्बर महीने में आयोजित हो रही है. यह परेड जंतर मंतर तक होती है. 2016 में तो LGBTQ+ के साथ साथ दलितों , मुसलमानों , महिलाओं, विकलांगों, कश्मीरियों , उत्तर-पूर्वियों , आदिवासियों ,शिक्षाविदों, फिल्म निर्माताओं और छात्रों के स्वतंत्रता का मुद्दा उठायागया था.भारतीय प्राइड मूवमेंट IPC की धारा 377 के इर्द-गिर्द घूमती है. यह ब्रिटिश काल काएक पुराना कानून है, जो समलैंगिकता कोअपराध मानता है. हालांकि 2018 में इसे निरस्तकर दिया गया है. मुंबई, पुणे, चेन्नई सरीखे शहरों में भी प्राइड मंथ के अवसर पर सतरंगी झंडा लहराती रैलियांदेखने को मिलती हैं. प्राइड मंथ के मौके पर गर्ल्स आर्मर मैग्जीन की ओर से तमामपाठक वर्ग को सतरंगी सलाम.

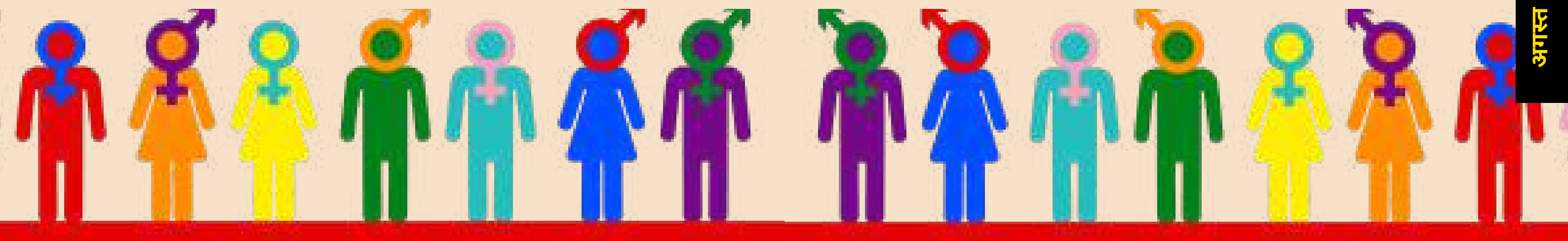

नैंसी त्यागी

मां की सिलाई मशीन से सपने सिलने वाली नैंसी त्यागी

|अभिषेक श्रीवास्तव |

HOW DO YOU DOING? का जवाब जब रेड कारपेट पर "बढिया" कह कर दिया गया, तब दुनिया की निगाहें रेड कारपेट पर मौजूद उस लड़की पर पड़ीं जिसका नाम था, नैंसी त्यागी. उत्तर प्रदेश के छोटे गांव से निकली यह 23 साल की लड़की, जितने फक्र के साथ अपनी माँ की सिलाई मशीन पर सिली ड्रेस पहनती है, उतने ही फक्र के साथ अपनी माँ की सिखाई जुबान बोलती है. मीशो के लिए वीडियो बनाने से आरंभ हुआ यह सफर सोशल मीडिया के रास्ते होते हुए कान फिल्म फेस्टिवल के चौराहे कैसे पहुंचा, आइए जानते हैं. साथ ही जानते हैं मां को फैक्ट्री से निकालने की उस जिद के बारे में, जिससे नैंसी का हौसला अफ़ज़ाई होता रहा.

हिंदी मीडियम में पढ़ाई

नैंसी त्यागी, उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में आने वाली बरनावा तहसील से आती हैं. आमतौर पर नाम और पते के बाद शिक्षा सम्बंधी सवाल ही आता है. लेकिन नैन्सी त्यागी का हुनर स्कूल-कॉलेजों की चार दीवारी में नहीं निखरा, बल्कि उसकी लगन और शौक से चमका है. बहरहाल, औपचारिकता निभाते हुए, आपको बताते चलते हैं कि नैंसी की 10वी मामा के घर सहारनपुर से हुई. 12 वी बागपत जिले के हिंदी मीडियम स्कूल से. "हिंदी मीडियम" पर इस लिए भी जोर दिया जाए क्योंकि इनके भाई अंग्रेजी मीडियम में पढे. यह बस इत्तेफाक नहीं है, बल्कि उस सामाजिक सोच का नतीजा है, जो लडकी की पढाई पर पैसे खर्च नहीं करना चाहती. इसकी कई वजह हैं, मसलन अधिक पढी लिखी लड़की अपने सास ससुर और पति के ओछे मान सम्मान को चुभने लगती है. पढाई से जन्मा विवेक नारी में विद्रोह की आग सुलगाता है, जिसकी तपस से पुरूषसत्ता का दम घुटने लगता है. नैनसी खुद बताती हैं कि वे ऐसे माहौल से निकल कर आई हैं जहां लोग रोक टोक करते हैं. वे आगे कहती हैं,"जैसे माहौल में हम हैं, सब चीजों से डर लगता है.बाहर कैसे जाएंगे. इंग्लिश में कैसे बात करेंगे."

दिल्ली पहुंची नैंसी

नैंसी की 12 वी हो चुकी है. अब तक उनकी मम्मी भी स्कूलों में पढा रही हैं. लेकिन अब नैंसी की कहानी में नया शहर जुड़ने को है. यह शहर है दिल वालों का दिल्ली. UPSC करने नैंसी, भाई और मम्मी के साथ दिल्ली आ गईं. लेकिन शहर बदलने का यह सफर आसान नहीं था. जिसने बेटी को हिंदी मीडियम में पढाया वो बाप इतनी आसानी से कैसे मान जाता. एक और पितृसत्तात्मक परवरिश थी तो दूसरी ओर मां का बेटी पर विश्वास, जो मां में यह कहने की दम भर रहा था कि "लड़की

को पढ़ना है". जीत के आगे मां का नाम लिखा गया. परिवार की जमा पूंजी और मां के गहने बेंच कर बेटी के लिए 3 लाख रुपये जोड़े गए. और त्यागी परिवार के तीन सदस्य भाई-बहन और मां दिल्ली आ गए. पिता, वहीं रुक के कैब चलाते रहे.

फैक्ट्री में काम करती मां

दिल्ली में भी घर चलाना था. अतः शहर के साथ मां का काम भी बदला. स्कूल टीचर, अब फैक्ट्री में काम करने लगी थीं. जिसमें न काम के तय घंटे थे, न कोई सुरक्षा. काम के दौरान मशीन में हाथ फसने का भी खतरा मंडराता रहता था. रात को मां जब कोयले से सनी हुई घर पहुंचती थी, तो मां का यह हाल भाई बहन को भीतर से तोड़ देता था. उन्हें लगता था कि किसी तरह मां को इस अमानवीय हालात से बाहर निकालना है.

गरीबी में आटा गीला करने आया कोरोना. जिसका मतलब था लॉकडाउन. बीमारी से लोग बाद में मरते पर भूख लोगों को पहले खा जाती. इसी डर से नैंसी के मन में मरने के भी ख्याल आने लगे थे. ख्यालों से लेकिन घर नहीं चलते. घर चलाने महामारी के दौरान भी मां को 6-7 हजार रुपये कमाने रात-रात भर काम पर जाना पड़ता था. दोनो भाई बहन की बस यही चाह थी कि 10000 रुपये महीने के आने लगे तो गुजारा हो जाए. सिर पर कोरोना, गरीबी और मां के हालात हैं और हाथ में जमा पूंजी से बचे महज 1-2 लाख रुपये. फैक्ट्री बंद होने का डर इस परिस्थिति को और भयानक बना रहा था. इन बचे पैसे में पढ़ाई नहीं हो सकती थी. अतः भाई-बहन ने कैमरा लेने का फैसला किया. वे दोनों ऐसी बाजी खेल रहे थे. जिसमें सौदा अर्श या फर्श का था. लेकिन आस की एक जुबान भीतर से दोनों को सफलता का आश्वासन जरूर दे रही थी.

मां की सिलाई मशीन

भाई ने कैमरा संभाला और बहन ने स्टेज. वीडियो बनाने की शुरूआत transition reels बनाने से हुई. इस सिलसिले में Meesho के लिए भी रील बनाई गईं. शुरुआती वीडियो में तो मां की साड़ी उपयोग में ली गई. लेकिन नेम और फेम की जो चिड़िया है वो इतनी जल्दी कहां आ कर बैठती है. पहले साल में तो रीच न के बराबर आती थी. वीयू की बात करें तो गाड़ी 100 से आगे नहीं बढ़ती थी. भाई-बहन, यह तो समझ गए थे कि कुछ हट के करना होगा तभी आर्थिक आजादी का सपना हकीकत में तब्दील होगा. नैनसी बताती हैं कि बचपन में वे अपनी खिलौने की गुड़िया के लिए पोशाक सिला करती थी. कभी उन्हे आभास न हुआ कि जिस काम को वो खेल खेल में टाल दे रहीं हैं, वो उनको अनूठा बनाता है. वो उनकी खूबी है. इस तब्दीली की आवश्यकता ने हुनर की खोज की. इस खोज का माध्यम बनी घर पर पड़ी सिलाई मशीन. इस मशीन का गृह प्रवेश मां के साथ हुआ था. मां के शादी की मशीन से नैंसी ने बड़े डिजाइनरों की डिजाइन और फेमस फिल्मी किरदारों के कपड़े रिक्रिएट करना शुरू किया. टीवी चैनलों को दिए इंटरव्यू में नैन्सी बताती हैं कि वो आज भी उसी मशीन से अपने कपड़े डिजाइन करती हैं. कान फिल्म फेस्टिवल की चारों ड्रेस भी उन्होने मां की मशीन से बनाई हैं. वो पिंक गाउन भी, जिसके लिए वे चर्चा में आईं थी.शोहरत के तख्त पर बैठने के बाद भी नैन्सी मां की मशीन से ही अपना हुनर सिलती हैं.

ट्रोलिंग के चलते सोशल मीडिया छोड़ा

सोशल मीडिया सस्ता है और सबका है. इस जनमाध्यम का यह गुण तथाकथित अभिजातों(SO CALLED ELITES) को चुबता है. इसी चुबन के घमंड को आराम देने सोशल मीडिया पर कुछ गालियां खोजी गईं, इसमें "छपरी" शब्द सबसे प्रभावी और सबसे ज्यादा प्रयोग वाला है. आपको समझना होगा कि किसी पिछडे माहौल से उतरते कंटेंट क्रिएटर की जब लाजमी अलोचना मुमकिन न हो, तब इस शब्द की आड़ लेकर उसकी कामयाबी पर फबती कसी जाती है. उसे मानसिक उत्पीड़न दी जाती है. उसको सपोर्ट करने वालों को भी छपरी कहा जाता है, ताकि वे ऐसा करना बंद कर दें. नैनसी त्यागी भी जब ड्रेसों को रिक्रिएट कर रहीं थी, तब वह इसी अभिजात्य वर्ग का शिकार हुईं. उन्हें भी भद्दे कमेंट्स झेलने पड़े. उनके भी मीम बनाए गए. बॉडी शेमिंग की गई. नैन्सी बताती हैं कि जब यह सारे हथकंडे अपनाए जा रहे थे. तब रीच तो मिल रही थी, लेकिन इज्जत और पैसा नदारद थे. रिश्तेदार भी फोन कर के टोक रहे थे कि यह क्या कर रही है. उनके पिता के कान तो पहले ही भरे जा चुके थे कि लड़की को इतना पढाने का क्या मतलब. भारतीय समाज जो डॉक्टर-इंजीनियर और सरकारी नौकरी की बाइनरी में उलझ कर रह गया है. वो अपनी पूरी ताकत झोंक रहा था, नैंसी का मनोबल तोड़ने, पर नैंसी नहीं टूटी. लेकिन नैनसी की कहानी में भी एक ऐसा दौर आया जब उन्होंने ट्रोलिंग के चलते सोशल मीडिया लगभग छोड़ दिया था. किसी फैशन स्कूल में गए बिना उन्होने फैशन की दुनिया में वो मुकाम हांसिल किया जो लाखों खर्च करने के बाद भी नामी फैशन कॉलेजों के अनेक ग्रेजुएट हासिल नहीं कर पाते. नैंसी ने दिल्ली के बाजारों से कपड़ा उठाया और हुनर से स्क्रेप को फैशन में बदल दिया.

ड्रीम भी नहीं था इतना बड़ा तो

नैन्सी को 10 हजार महिने के कमाने थे, ताकि मां को आजाद कर सकें. आज नैंसी के इंस्टाग्राम पर 24 लाख फॉलोअर्स हैं. जिस हवाई जहाज की बिजनेस क्लास में वो बैठ कर कान फिल्म फेस्टिवल के लिए फ्रांस पहुंची, उसकी टिकट ही उनकी सोची आय से महंगी थी. रेड कारपेट पर खड़ी हो कर वे कहती हैं कि, "मेरा ड्रीम भी नहीं था इतना बड़ा तो, जिधर में खड़ी हूं." अपनी 20 किलो की ड्रेस के बारे में जिसको लेकर उन्हे सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि यह उनके ही आइडिया का नतीजा है. इसके लिए उन्होंने किसी की डिजाईन को रीक्रिएट नहीं किया है. कान फिल्म फेस्टिवल में जाने की जब बात उठी तो पिता ने मना कर दिया. लेकिन मां का वीटो नैंसी के पक्ष में था. मां की इस जुर्रत ने बेटी की जिंदगी बदल दी. लेकिन नैंसी और रेड कारपेट के बीच में नैंसी की वो परवरिश भी खड़ी थी, जिसने उनको भाई पर निर्भर कर दिया था. निर्भरता का आलम यह था कि नैंसी घर से 1 KM दूर भी, अपने भाई के बिना नहीं जाती थीं. यहां तो सात समुंदर पार जाने की बात हो रही थी. लेकिन उन फूलों को खिलने से कौन रोक सकता, जिनका खिलना तया हो. नैनसी भाई के बिना फ्रांस गईं और रेस्ट इस हिस्ट्री.

‘लापता लेडीज’

| गोविन्द राज |

भारतीय सिनेमा से आज भी समाज का एक बड़ा वर्ग लापता है. जहां लड़कियों को सिर्फ़ इस लिए पाला जाता है की वो पत्नी बन सकें. जहां लड़कियों की आवाज सिर्फ घर के चारदीवारी के अंदर ही सुनाई देती है. पति को नाम लेकर बुलाना गुनाह माना जाता है. घर में खाना सिर्फ पुरुषों के पसंद का ही बनता है. लड़कियों को केवल इस लिए पढ़ाया जाता है कि शादी के समय सर्टिफिकेट दिखा सके. किरण राव ने अपनी फिल्म में ग्रामीण समाज की इन लापता लेडीज के संघर्ष की कहानी बखूबी दिखई है.

निर्देशक किरण राव ने कहानी को बारीकी से बुना और इसके माध्यम से कई समाजिक मुद्दों को उठाया है. जिस घूंघट के कारण दुल्हनों की अदला-बदली हुई है, वो भी एक तरह से पितृसत्तात्मक सोच पर प्रहार करता है और इसी पॉइंट पर वो फिल्म का मिजाज सेट कर देती हैं. ग्रामीण परिदृश्य में कई महिला पात्र हैं और हर पात्र के जरिए वे एक मुद्दे को चिन्हित करती हैं, जैसे अनपढ़ फूल ब्याह करके ही खुश है, मगर स्टेशन पर रहते हुए उसे अपनी कुकिंग स्किल का पता चलता है और वो खुद को आत्मनिर्भर बनाती है. दूसरी तरफ पुष्पा है, जो आगे पढ़कर कुछ बनना चाहती है.

स्टेशन पर चाय की दुकान चलाने वाली मंजू ताई ने घरेलू हिंसा और नाकारा पति को नकार कर अकेले ही अपनी जिंदगी जीने का फैसला किया है. दीपक की भाभी का किरदार एक ऐसी महिला का है, जो लंबे अरसे से परदेस में रहने वाले पति की एक ड्राइंग बनाकर उसके इंतजार में दिन काट रही है. फिल्म में इस बात पर गहरा कटाक्ष किया गया है कि, समाज की ‘इज्जतदार लड़की’ सबसे बड़ा फ्रॉड है, वो इसलिए कि इसी तमगे के कारण वह कभी सवाल नहीं कर पाती.

लापता लेडीज' की लिखावट काफी शानदार है. बिप्लव गोस्वामी की कहानी, स्नेहा देसाई की पटकथा और दिव्य निधि शर्मा के संवादों में चुटकिलापन है. कास्टिंग फिल्म का एक और मजबूत पक्ष है, जिसे रोमिल मोदी ने बखूबी निभाया है. सिनेमेटोग्राफर नौलखा ने काबिल-ए-तारीफ काम किया है. संगीत की बात करें, तो संगीतकार राम संपत ने विषय के अनुरूप म्यूजिक दिया है.

इस फिल्म में निहित फेमिनिज्म की प्रकृति पैनी न हो कर गुदगुदाने वाली है. यह पुरुष सत्ता पर प्रहार तो करता है, पर लक्ष्मण रेखा में रह कर. फूल ने बागी तेवर तो अपनाए पर शादी नामक संस्था के अधीन रह कर ऐसा किया गया. अपने परमेश्वर की याद में शेष जीवन गुजारने तैयार फूल, सतित्व मर्यादा का ही प्रतिनिधित्व कर रही होती है. यह वही मर्यादा है, जिसकी शिक्षा दादी,नानी और मम्मी बचपन से बेटियों को सिखाती हैं. बुरा है, भला है पर पति मेरा देवता है. इसी देवता के लिए फूल रेलवे स्टेशन पर ता उम्र इंतजार करने तैयार है, मानो उसके जीवन का मकसद ही पति के चरणों में अर्पित होना है. फिल्म के किरदारों का नामकरण भी पितृसत्ता का आंशिक प्रतीक है. नायीका को फूल का नाम दिया है और नायक को सूरज का. प्राकृत्कि नियमानुसार फूल सूरज पर पूर्णता निर्भर होता है. आगे पाठक समझदार है.

मंजू ताई के किरदार में भी एक दोहरापन देखने को मिलता है. इस किरदार ने अपनी उन्मुक्ति की कीमत अपनी खुशियों से चुकाई है. यह समुचि फिल्म का सबसे दुखी किरदार है.मंजू बाई के मार्फत फिल्म कह रही है कि, पति और परिवार के बिना जीवन में खुशियां नहीं बचती हैं. मंजू बाई, इस फिल्म की दूसरी फूल है, अंतर बस यह है कि उनके जीवन में कोई सूरज नहीं है.

फिल्म रिव्यू

महिला सुरक्षा के लिए स्टाइलिश ज्वेलरी डिवाइस 'SAFER'

| गोविन्द राज |

दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (DTU) के छात्रों ने महिला सुरक्षा के लिए एक इनोवेटिव ज्वेलरी डिवाइस 'Safer' बनाया है. ये आकर्षक पेंडेंट न सिर्फ स्टाइलिश है बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी काफी फायदेमंद है.पेंडेंट में एक खास बटन होता है,अगर आप कभी भी असुरक्षित महसूस करते हैं, तो इस बटन को दबाने पर ये आपके पहले से सेट किए हुए कॉन्टैक्ट्स, जैसे कि परिवार या दोस्तों को तुरंत फोन कर देगा और आपकी लोकेशन भेज देगा. साथ ही, ये आस-पास के उन लोगों को भी इमरजेंसी अलर्ट भेज सकता है. जो उसी सेफर ऐप को इस्तेमाल करते हैं.

ये डिवाइस पानी से खराब नहीं होता और तीन रंगों ऑनक्स ब्लैक, सैफायर ब्लू और एमरल्ड ग्रीन में उपलब्ध है. इसकी खास बात ये है कि अगर डिवाइस चोरी हो जाता है, तो भी ये काम नहीं करेगा क्योंकि ये आपके फोन के साथ पेअर्ड होता है. अगर आपका 'Safer' चोरी हो जाता है, तो आप ऐप में इसे लॉस्ट मार्क कर सकते हैं. डेवलपर्स की तरफ से इसकी लोकेशन ट्रैक करने में भी मदद मिलेगी. डिवाइस के डेवलपर्स का कहना है कि इसे इस तरह से बनाया गया है कि ये फैशन के साथ-साथ महिलाओं को सुरक्षा का भरोसा भी दे.इसे लॉस्ट मार्क कर सकते हैं. डेवलपर्स की तरफ से इसकी लोकेशन ट्रैक करने में भी मदद मिलेगी. डिवाइस के डेवलपर्स का कहना है कि इसे इस तरह से बनाया गया है कि ये फैशन के साथ-साथ महिलाओं को सुरक्षा का भरोसा भी दे. सेफलेट एक छोटा, हल्का और स्टाइलिश डिवाइस है जिसे आप आसानी से अपने हाथों में ब्रेसलेट या घड़ी की तरह पहन सकते हैं. इसमें दो बटन होते हैं. यदि आप किसी भी प्रकार के खतरे का सामना करती हैं, तो आप इन बटनों में से किसी को भी दबा सकते हैं. किसी भी तरह के खतरे की स्थिति में इन बटनों को दबाने से तुरंत एक अलर्ट मैसेज आपके परिजनों या किसी करीबी को भेज दिया जाता है.साथ ही, यह डिवाइस आपके मोबाइल फोन के साथ सिंक्रोनाइज्ड होकर वॉइस रिकॉर्डिंग भी शुरू कर देता है.

अलर्ट मिलने पर, संबंधित व्यक्ति ऐप के जरिए तुरंत इमरजेंसी नंबर पर कॉल कर सकते हैं. इस तरह सेफलेट किसी भी खतरनाक परिस्थिति से निपटने में आपकी मदद करता है और आपके परिजनों को भी सूचित रखता है.

पंडिता रमाबाई

| जयदीप दिनकर |

भारत में उन्नीसवीं सदी का दौर पुनर्जागरण और सुधारवादी आंदोलनों का दौर रहा है. इसी दौर में रमाबाई तत्कालीन महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मणों के रूढ़ियों तथा पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ़ एक मुखर और तार्किक स्वर के रूप में उभरती हैं. रमाबाई, सामाजिक संरचना को एक 'स्त्री दृष्टि' से देखती हैं तथा समाज के रूढ़ीवादी रवैये को चुनौती देती हैं. उस समय के समाज में नारियों की गरिमा और अधिकारों के लिए कोई स्थान नहीं था. ऐसे में सामाजिक यथास्थिति को इतने मुखर और निर्भीक चुनौती के कारण रमाबाई को समाज से अपमान और उपेक्षा ही हासिल हुई. पंडिता रमाबाई को अपने समय के पुरुष समाज सुधारकों के समकक्ष एक अकेली और क्रांतिकारी महिला समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है. उन्होंने व्यावहारिक रूप से भारतीय नारीवादी आंदोलन की नींव रखी.

परिस्थिति ने साहसी और विद्रोही बनाया

रमाबाई के पिता अनंतशास्त्री डोंगरे एक चितपावन ब्राह्मण थे पिता स्त्री तथा शूद्र शिक्षा के हिमायती थे. उन्होंने शास्त्रों का अध्ययन करके ऐसे अध्यायों तथा श्लोकों का संकलन किया जो शूद्रों तथा स्त्रियों को पढ़ने का हक़ देते हों. सती प्रथा के खिलाफ़ इसी तरह की युक्ति का इस्तेमाल राजा राम मोहन. राय कर चुके थे. धार्मिक समुदाय का दबाव तर्कों और प्रमाणों से कम नहीं होता है . कट्टरता का कवच पहनाकर ही धर्म को सुरक्षित रखा जाता है. इसी वजह से समाज से बहिष्कृत होकर अनंत शास्त्री के परिवार को गंगामूल के जंगलों में निवास करना पड़ा. इसी दौरान एक बेटे और दो बेटियों की शिक्षा चलती रही. परिवार तीर्थाटन करता रहता था और पिता तीर्थों पर शास्त्र-पुराणों की कथा अविचल भाव से करते रहते थे. यात्रा में लोग सुनने आते तो कुछ दान दे जाते, जिससे परिवार की दो जून की रोटी निकल आती.

तत्कालीन मान्यताओं के अनुरूप ब्राह्मण होने के चलते यह परिवार शारीरिक श्रम नहीं कर सकता था इसलिए यह परिवार तीर्थ दर्शनार्थियों की सेवा करता रहता था. लेकिन आर्थिक अभाव धीरे-धीरे बढ़ने लगे और परिवार के सामने भुखमरी की स्थिति आ पहुंची. परिवार पर कर्ज का बोझ बढ़ता चला गया. रमाबाई की उम्र 16 हो चुकी थी, जब पिता ने जल-समाधि लेकर इस जीवन को समाप्त करने का निर्णय लिया था. लेकिन बेटे ने उन्हें जैसे तैसे मना लिया था. इसके कुछ ही वर्षों बाद अनंत शास्त्री की मृत्यु हो गयी. बचे परिवार के सदस्यों ने यात्रा जारी रखा . अकाल के चलते रास्ते में ही माँ की भी मौत हो गयी. इस तरह भूख, गरीबी, उपेक्षा और सामाजिक ढोंग, यह सब देखते हुए रमाबाई किशोरी से युवती हुईं.

इंग्लैंड में चर्चा तथा सरस्वती की उपाधि

1878 में 16 साल की आयू में ही रमाबाई अपने भाई श्रीनिवास के साथ कलकत्ता पहुंचीं. यहां रमा ने अलग अलग प्रकार के श्रोताओं के सामने पुराणों का पाठ किया, जिसके

चलते उसे 18,000 से ज्यादा श्लोक मुँह-ज़बानी याद हो गए थे. रमा ने इसका लाभ उठाया और जगह जगह पर भाषण देना शुरू कर दिया. संस्कृत बोलती इस स्त्री की चर्चाएँ होने लगी, तथा रमा के भाषणों ने अखबारों में अपनी जगह बनाना शुरू कर दिया. सन 1878 में भारतीय अखबार के माध्यम से रमाबाई के भाषण का एक अंश डब्ल्यू. हंटर तक भी पहुंच गया. साल 1881 में हंटर ने अपनी लिखी किताब 'इंग्लैंड वर्क्स इन इंडिया ' में रमाबाई के बारे में विस्तार से टिप्पणी की है.

रमाबाई की विद्वता और प्रखरता से प्रभावित होकर कलकत्ता विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में रमाबाई को भाषण के लिए आमंत्रित किया गया. उस सभा में संस्कृत के पाश्चात्य विद्वान प्रोफ़ेसर टॉनी, प्रोफ़ेसर गौफ़ और पंडित महेशचंद्र न्यायरत्न जैसे विद्वान उपस्थित थे. प्रो.टॉनी ने रमाबाई का 'साक्षात सरस्वती' कहकर स्वागत किया. इसका उत्तर देते हुए रमाबाई ने कहा कि, "आप मेरी जितनी प्रशंसा कर रहे हैं मैं उसकी पात्र नहीं हूँ. मैं सरस्वती नहीं ब्लकि सरस्वती की सभा में एक सेविका मात्र हूँ". इस तरह रमाबाई को सरस्वती की उपाधि मिली.

कुछ ही दिनों बाद भाई श्रीनिवास की मृत्यु हो गई. इसके बाद रमाबाई का धर्म से विश्वास डगमगाने लगा. रमाबाई एक जगह लिखती हैं- "धीरे-धीरे मेरी आंखें खुलने लगी. एक स्त्री के असहाय स्तिथि को देखकर मुझे समझ आने लगा कि धर्म के पास मेरे लिए कोई आश्वासन नहीं है, मेरा कहीं कोई स्थान नहीं है, मैं अपने आप से काफी असंतुष्ट हो गयी."

13 नवंबर, 1880 को रमाबाई ने बाँकीपुर के एक कोर्ट में विपिन बिहारी दास 'मेधावी' से विवाह किया. मेधावी के कायस्थ होने के कारण इस विवाह को भी सामाजिक उपेक्षा का शिकार होना पड़ा . साल भार बाद रमा ने एक बेटी 'मनोरमा' को जन्म दिया. लेकिन रमाबाई के जीवन में दुख ने एक बार फिर दस्तक दिया और 4 फरवरी 1882 को पति मेधावी की हैजे से मृत्यु हो गई. इसके बाद निराशा से रमाबाई ने पुणे लौटने का मन बना लिया. गर्दन तक कटे बाल, सफ़ेद साड़ी और छोटी बच्ची को लिए चौबीस बरस की रमाबाई पुणे आई. महाराष्ट्र के सुधारवादी दायरे ने अपनी ब्राह्मण बेटी के आगमन का बड़े गर्व के साथ स्वागत किया. यहाँ आने के दोमहीने के भीतर रमाबाई ने महाराष्ट्र का पहला महिला संगठन बना लिया जिसका नाम 'आर्य महिला समाज'पढ़ा. प्रार्थना समाज के सुबोध पत्रिका में आर्य महिला समाज की सभा में रमाबाई के भाषण का एक हिस्सा दर्ज है- "पुरुष हमें गुलाम के रूप में देखते हैं, हम इस स्तिथि से बचने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं . इसे कुछ लोग पाप और पुरुष के

आर्य महिला समाज, स्त्री धर्म नीति तथा हंटर आयोग

ख़िलाफ़ विद्रोह मानते हैं लेकिन बुरे कामों का प्रतिरोध किए बिना उसे चुपचाप सहना पाप है". रमाबाई के स्त्री उत्थान में दिए गए भाषणों का संकलन उनकी पहली किताब 'स्त्री धर्मनीति' के रूप मे आया. इस किताब में रमा एक ऐसी स्त्री की परिकल्पना करती हैं जो किसी पर बोझ नहीं है. जो मेहनती और शिक्षित है. सन 1882 में शिक्षा सुधारों को लेकर हंटर आयोग भारत आया . पुणे के टाउन हॉल में आर्य महिला समिति ने आयोग का स्वागत किया. इसमें रमाबाई ने मराठी में अपना संबोधन भी दिया. इस संबोधन में रमाबाई ने आयोग को तीन सुझाव दिए, लड़कियों को पढ़ाने के लिए महिला अध्यापिकाएं हों, जिनकी अलग से ट्रेनिंग हो, महिला डॉक्टर बनाई जाएं, उन्हें अधिक तनख्वाह मिले और विद्यार्थियों और अध्यापिकाओं की विद्यालय परिसर में ही रहने की व्यवस्था की जाए.

इंग्लैंड और अमेरिका प्रवास

साल 1882 में रमा ने शिक्षा के लिए इंग्लैंड जाने की सोची. जिस साल, यानी 1882 में डॉक्टरी की पढ़ाई करने कलकत्ता से आनंदीबाई जोशी अमेरिका के लिए निकलीं, उसी साल रमाबाई बेटी के साथ इंग्लैंड के लिए रवाना हुईं. वहाँ रमा ने एक कॉलेज में संस्कृत पढ़ाना शुरू किया. लेकिन कॉलेज के युवकों को एक विधवा औरत पढ़ाए, इस पर खूब विवाद हुआ इसी बीच आनंदीबाई जोशी के दीक्षांत समारोह के लिए उन्हें पेंसिल्वेनिया महिला मेडिकल विद्यालय की प्रिंसिपल रैचेल एल बॉडले ने आमंत्रित किया. इसी दौरान अमेरिका के अलग-अलग शहरों में घूम कर रमाबाई ने भाषण दिए और भारत में स्त्री शिक्षा की जरूरत और अपने सपने के लिए आर्थिक मदद इकट्ठा की. 1887 में 'अमेरिकन रमाबाई असोसिएशन' का गठन हुआ. इसका उद्देश्य भारत में स्त्री शिक्षा के लिए रेसिडेंशियल सेक्युलर स्कूल खोलने के लिए रमाबाई को आर्थिक मदद मुहैया कराना था. इसी दौरान उन्होंने अपनी कालजयी पुस्तक 'द हाई कास्ट हिंदू वुमन' की रचना की और इसके पैसे से वापिस लौटने का इन्तेजाम किया.

पुनः स्वदेश आगमन

साल 1889 में रमाबाई भारत वापस आई और 11 मार्च 1889 को उन्होंने 20 लड़कियों के साथ मिलकर मुंबई में 'शारदा सदन' खोला. इसके अंतर्गत महिलाओं को पढ़ना लिखना, इतिहास, पर्यावरण आदि से जुड़ी जानकारी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा. इसके बाद रमाबाई पुणे के पास खेड़गांव गई, जहां उन्होंने 100 एकड़ जमीन खरीदी और 'मुक्ति मिशन' की स्थापना की. उन्हो ने स्कूल जाने वाली महिलाओं और बच्चों को आवास प्रदान किए तथा उन्हें विभिन्न कौशलों में निपुण बनाया.

रमाबाई के स्त्री उत्थान में किए गए कार्यों को देखते हुए वर्ष 1919 में उन्हें कैसर-ए -हिंद की उपाधि दी गई. भारत सरकार ने रमाबाई के नाम पर एक डाक टिकट जारी किया था तथा उनका बनाया मुक्ति मिशन आज भी सक्रिय है. उन्होंने स्वयं विषम परिस्थिति में शिक्षा ग्रहण की तथा समाज के महिलाओं को शिक्षित करने का जिम्मा उठाया. महिलाओं के अधिकार, गरिमा तथा सशक्तीकरण के लिए रमाबाई ने विद्रोह भी किया. लेकिन यह कहना गलत ना होगा कि रमाबाई हमारे इतिहास में जिस सम्मान की हकदार थी उन्हें वह सम्मान हम नहीं दे पाए.

हिंदुस्तानी समाज में तवायफ़ें

| जयदीप दिनकर |

हिंदुस्तानी समाज में तवायफ़ें हमेशा से मौजूद रही हैं. लेकिन इतिहास में जिन्हें कभी समाज में ऊंचा दर्जा प्राप्त था, अब ना सिर्फ़ दुत्कार का विषय बन चुकीं हैं, बल्कि तवायफ़ शब्द आज किसी गाली से कम नहीं है. देश में आज़ादी से पहले तक ये तवायफ़ें समाज का एक ताकतवर वर्ग मानी जातीं थीं. ब्रिटिश रिकार्ड के मुताबिक इंग्लिश राज में करदाताओं की सूची में सबसे ऊँचा नाम भारतीय समाज के तवायफ़ों का था. कौटिलय के अर्थशास्त्र में भी इस प्रकार के करदाताओं का जिक्र मिलता है.

तवायफ़ भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य की संरक्षक तथा प्रतिनिधि हुआ करती थीं . उनका समाज में एक रुतबा था और वे अपनी हुस्न और कला की बदौलत हमारी सांस्कृतिक परम्परा को सिंचित करती थीं. इनके कोठे तबले की धुन और रागों के आलाप से रौशन रहते थे. ये तवायफ़ें हमारे संगीत परंपरा की तमाम धाराओं - ठुमरी, कथक, मुजरा, गजल, ददरा जैसे शैली में निष्णात हुआ करती थीं.

हीरमंडी : उद्भव

मुगल काल में स्थापित लाहौर के हीरामंडी की कहानी, हाल ही में आयी संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित सीरीज "हीरामंडी -द डायमंड बाजार " बयां करती है . किसी ज़माने में लाहौर शहर की रौनक कही जाने वाली यह मंडी आज भी उसी जगह स्तिथ है जहाँ कभी देश के बड़े बड़े नवाब तथा रियासतदार रोज शाम को नमूदार हुआ करते थे. कहा जाता है कि हीरामंडी का नामकरण महाराजा रणजीत सिंह के प्रधानमंत्री हीरा सिंह डोगरा के नाम पर किया गया था. इसलिए शुरुआती दौर में इसे "हीरा दा मंडी" के नाम से भी जाना जाता था जो बाद में जबान की सहूलियत के कारण हीरामंडी में तब्दील हो गया.प्रारंभ में एक अनाज बाजार के रूप में स्थापित, यह एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुई, जिसने विभिन्न क्षेत्रों के तवायफों को आकर्षित किया. इन तवायफों ने शास्त्रीय संगीत और नृत्य में अपनी महारत का प्रदर्शन किया. ये प्रदर्शन उस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के उत्सव थे जो उस समय के समृद्ध और कुलीन लोगों के संरक्षण में विकसित हुई थी.हालाँकि, इन तवायफ़ें की सामाजिक स्थिति वर्तमान महिला सशक्तीकरण के पैमानों के लिए पूरी तरह उपयुक्त नहीं थी क्योंकि नवाबों के संरक्षण के कारण इन्हें कहीं ना कहीं इन अभिजातों पर निर्भर रहना पड़ता था. नवाब अपने शक्तियों का इस्तेमाल भी बखूबी करते थे, जिसके कारण कई तवायफ़ें को यौन शोषण तथा यौन हिंसा का शिकार भी होना पड़ता था, जिसका चित्रण भंसाली ने भी विस्तार से किया है.

अपनी 8 एपिसोड की नेटफ्लिक्स सीरीज में, भंसाली तवायफ़ों की भव्य और नाटकीय दुनिया को दर्शाते हैं. उन तथ्यों को दर्ज करते हैं जिनको आधिकारिक भारतीय इतिहास में एक वाक्य का उल्लेख भी नसीब ना हुआ. मसलन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तवायफ़ों की भूमिका को ना सिर्फ भुला दिया गया ब्लकि उन्हें असभ्य और असंस्कृत कहकर समाज से बहिष्कृत कर दिया गया.

अस्तित्व के लिए लड़ती तवायफ़

आज अगर किसी से तवायफ़ शब्द का अर्थ पूछा जाए तो उत्तर मिलेगा सेक्स वर्कर या वेश्या. लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं . तवायफ़ शब्द का अर्थ समय के साथ संकुचित होता चला गया है . दरअसल, तवायफ़ शब्द अरबी भाषा के त़वाफ शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है- गोल गोल घूमना या परिक्रमा करना, जो नृत्य कला के ज्यादा करीब जान पड़ता है. मुगल काल से लेकर अंग्रेजों के आगमन से पूर्व तक इस शब्द का उच्चारण बड़े ही सम्मान और आदर के साथ किया जाता था. लेकिन समय के साथ यह शब्द गाली का पर्याय बन गया. इस काल में तवायफ़ हमारे समाज की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में से एक थीं ,जो संगीत और एक विशिष्ट प्रकार के नृत्य, जिसे मुजरा कहा जाता था, में उत्कृष्ट थीं. तवायफ़ें, विशेषकर मुगल काल में, केवल समाज के अभिजातों जिनमें नवाब और बड़े-बड़े रईस आते थे, की मनोरंजन किया करती थीं.

तवायफ़ों की परवरिश

इन तवायफ़ों के कोठों पर लड़कियों को बहुत कम उम्र में कथक नृत्य और ठुमरी और ग़ज़ल जैसी गायन कलाओं में प्रशिक्षित किया जाता था. एक बार जब वे अपनी कला में परिपक्वता प्राप्त कर लेती थीं, तो माना जाता था कि वे महफिलों में प्रदर्शन करने के लिए तैयार हैं. इसके बाद इन प्रशिक्षित ल़डकियों की नथ -उतराई की रस्म पूरी की जाती थी. इसरस्म को भंसाली ने बड़े ही रोचक ढंग से सीरीज में उद्धृत किया है.

'नथ उतराई' सामंतवादी व्यवस्था में प्रचलित शब्द रहा है, जहां लड़की को घर की नाक, अर्थात इज़्ज़त माना जाता रहा है वहीं, नाक में पहने हुए नथ को किसी द्वारा उतारने का अर्थ लड़की के कौमार्य(Virginity) को भंग करना होता है. कोठों और वैश्यालयों में नथ उतराई की रस्म होती थी. लड़की को दुल्हन की तरह सजाया जाता था और नाक के बाईं तरफ एक बड़ी नथ पहनाई जाती थी. ये नथ उसके कौमार्य का प्रतीक होती थी. फिर, कई नवाबों को न्योता भेजा जाता था और लड़की के लिए बोली लगाई जाती थी. यह रस्म अपनी प्रकृति में बहुत ही अमानवीय रहा जहाँ कुँवारी लड़की की सरेआम कीमत लगायी जाती थी. और जो सबसे ऊँची कीमत लगाता था वो उस लड़की के साथ पहली बार शारीरिक संबंध बनाता

था. इस पूरे प्रकिया में एक बार भी लड़की की सहमती नहीं ली जाती थी . कई बार लड़की दबाव के कारण मजबूरन इसका हिस्सा बन जाती थी तो कई बार उसे जबरदस्ती इसका हिस्सा बनना पड़ता था. इस रस्म के दौरान कई बार लड़की नाबालिक भी होती थी. इसी सीरीज का डायलॉग है - "आज़ादी की कीमत, एक तवायफ़ से ज्यादा और कौन जान सकती है", यह पंक्ति उन कुँवारियों की दयनीय स्थिति को बयां करने के लिए सबसे उपयुक्त है.

जो सबसे बड़ी बोली लगाता था, वह उस लड़की के साथ पहली बार संबंध बनाता था. उस लड़की का कौमार्य भंग करता था. इसके बाद वे पूर्ण रूप से तवायफ़ कहलाने लगती थीं . कुछ लोगों का मानना है कि युवा नवाबों को तमीज़ और तहज़ीब के साथ-साथ गायन की कला सीखने के लिए इन तवायफ़ों के पास भेजा जाता था.

यौन संलिप्तता और तवायफ़

तवायफें केवल यौन कार्य से जुड़ी नहीं थीं. अक्सर इस बात पर बहस होती है कि क्या यौन कार्य कभी स्पष्ट रूप से उनके पेशे का प्रमुख हिस्सा था! हालाँकि, तवायफ़ें यौन संबंधों का आनंद लेती थीं, और उनके और उनके कद्रदानों के बीच ऐसे संबंध परस्पर सहमति से होते थे. लेकिन उनका मुख्य कार्य संगीत, गायन और नृत्य कला से संबंधित था. ब्रिटिश शासन और उपनिवेशवाद ने तवायफ़ों की छवि को संकुचित कर दिया, जिससे उन्हें 'नाच' शब्द से व्युत्पन्न 'नॉच गर्ल्स' जैसे लेबल तक सीमित कर दिया गया, जिसका शाब्दिक अर्थ "नृत्य" या "नाचने वाली लड़कियां" है. विक्टोरियन दृष्टिकोण ने शिक्षा, विरासत और संस्कृति के इन संरक्षकों को महज "वेश्याएँ" बना दिया. श्रद्धेय कलाकारों से हाशिए की हस्तियों में संक्रमण तेजी से हुआ. वेश्यावृत्ति के लेबल ने समाज में तवायफ़ों के संबंध में एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण विकसित किया और इस वर्ग को उसकी स्थिति से वंचित कर दिया गया और इसकी उपेक्षा की जाने लगी.

स्वतंत्रता आंदोलन और तवायफ़

उत्पीड़न और विलुप्त होने के खतरे का सामना करने के बावजूद, तवायफ़ों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. वे समाज की सबसे दौलतमंद वर्गों में से एक थीं. वक्त आने पर उन्होंने अपनी संपत्ति स्वतंत्रता और विद्रोही आंदोलनों के लिए दान कर दी. तवायफ़ों ने 1857 के विद्रोह के दौरान विद्रोहियों को शरण और समर्थन प्रदान किया और महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया. उनके योगदान, वित्तीय और वैचारिक, दोनों ने उनके देशभक्ति को रेखांकित किया लेकिन अफ़सोस की हमने उसे तरजीह देना तो दूर उनकी पहचान तक को मिटा दिया.

फिर भी, तवायफ़ों की विरासत अवज्ञा और साहस की कहानियों के माध्यम से कायम है, जिसका उदाहरण गौहर जान, बेगम हज़रत महल, अज़ीज़ुनबाई और हुस्ना बाई जैसी शख्सियतें हैं, जिनके स्वराज कोष में योगदान और विभिन्न स्वतंत्रता आंदोलनों के समर्थन ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच तवायफों की स्थायी भावना को उजागर किया. ये समाज की वो महिलाएँ थी जो सामंतवादी व्यवस्था, जिसमें स्त्रियों को उसकी अधिकारों तथा गरिमा प्रदान करने का विवेक नहीं था, के बीच आत्मनिर्भर थीं और अपने हिस्से की निर्णय खुद लेने की माद्दा रखती थीं. लेकिन यह भी सच है कि हमारे पितृसत्तात्मक समाज ने इनके योगदानों को स्वीकारना मुनासिब नहीं समझा. आज हमारे इतिहास में इनके ज़िक्र की एक पंक्ति तक नहीं मिलती है. इन तवायफ़ों ने इस वतन के लिए अपने अस्तित्व तक की आहुति दे दी लेकिन बदले में हमने उन्हें सम्मान तो दूर ब्लकि याद में भी नहीं रखा।

ओवेरियन सिस्ट

| योगेश शर्मा |

आज इस आधुनिक युग में अनियमित भोजन और लाइफस्टाइल से हमारी सेहत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ते हैं. महिलाओं पर इसका अधिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि यदि महिला बाहर काम करके अपनी अस्मिता और पहचान बनाना चाहती है तो भी उन्हें बाहर के काम के साथ साथ घर का चूल्हा चौका भी संभालना पड़ता है. इस प्रकार आवश्यकता से अधिक ऊर्जा खपाने के चलते महिलाओं में विभिन्न प्रकार के रोग जन्म लेते हैं और इन रोगों की वजह से महिलाओं को आगे चलकर बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ता है. उन रोगों में से एक है- अंडाशय का सिस्ट (OvarianCyst). हिंदुस्तान टाइम्स में 17 जनवरी 2023 को छपे एक लेख के अनुसार भारत की 20 से 25 प्रतिशत महिलाएं किसी न किसी प्रकार के ओवेरियन सिस्ट ग्रसित हैं. यह चिंता का विषय है. आइए गर्ल्स आर्मर के माध्यम से जानते हैं ओवेरियन cyst के बारे में.*अंडाशय का सिस्ट क्या है?*सिस्ट (Cyst) का अभिप्राय एक तरह की गांठ से है जो शरीर के अंदर या बाहर कहीं भी हो सकती है. यह एक प्रकार की असामान्य थैली है. जो अपने आसपास की कोशिकाओं से अलग होती है. यह खून या मवाद की बनी हो सकती है. यह सिस्ट जब ओवरी के अंदर बनने लगते हैं तो इन्हें ओवेरियन सिस्ट कहते हैं. महिलाओं में दो अंडाशय होते हैं जिनमें से एक दाई तरफ और दूसरा बाई तरफ होता है. इन अंडाशय में से किसी एक अंडाशय से हर महीने एक अंडा रिलीज होता है जो फर्टिलाइज होने के लिए पूरी तरह तैयार होता है. यदि यह अंडा फर्टिलाइज हो जाता है तो यह बच्चा बनने की प्रक्रिया को शुरू कर देता है नही तो ये नष्ट होकर मासिक पीरियड के माध्यम से शरीर के बाहर चला जाता है.अंडाशय में यह अंडा फॉलिकल्स के माध्यम से बनता है. यह फॉलिकल्स ओवरी में हजारों की संख्या में सूक्ष्म रूप से विद्यमान होते हैं. प्राकृतिक रूप से कुछ फॉलिकल्स बढ़ना शुरू होते हैं, कुछ दिन बाद एक को छोड़कर बाकी फॉलिकल बढ़ना बन्द कर देते हैं.औऱ वो एक फॉलिकल 3 से 7 सेंटीमीटर तक बढ़ता है और उसके बाद ये अंडा रिलीज कर देता है. अंडा रिलीज होने के साथ ही ये फॉलिकल पूर्ण रूप से विघटित हो जाता है और ओवरी फिर से सामान्य स्थिति में आ जाती है. अंडाशय में फॉलिकल का बनना और अंडा रिलीज करना प्राकृतिक प्रक्रिया है. यह सामान्य प्रक्रिया है और हर महिला में देखने को मिलती है. जब इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है, जब यह फॉलिकल 7 सेंटीमीटर से अधिक बढ़ने लगता है और अंडा रिलीज नहीं करता है, तब इसे ओवेरियन सिस्ट कहा जाता है. दो से तीन महीने के अंतर्गत में यह विघटित नहीं होता तो यह चिंता का विषय बन जाता है और इस स्थिति में डॉक्टर से परामर्श लेना अति आवश्यक बन जाता है. *ओवेरियन सिस्ट के लक्षण क्या हैं?*ओवेरियन सिस्ट बनते है और स्वयं ही मासिक धर्म से पहले नष्ट हो जाते हैं. निम्नलिखित लक्षणों को ध्यान में रखकर हम ओवेरियन सिस्ट का पता लगा सकते हैं. • पेट, योनि, पीठ और स्तनों में ऐसा अनियमित दर्द होना जो सामान्य दर्द निवारक गोली से ठीक न हो.• पेट में सूजन आना. मलत्याग करते समय दर्द होना. • संभोग के बाद ओवरी में यानी पेट के दाई या बाई तरफ दर्द होना.• पेट के निचले हिस्से में और मासिक धर्म से पहले पेल्विक दर्द होना।• उल्टी जैसा मन, असहजता, चक्कर आना, थकान और कमजोरी होना.• कम भूख लगना और बार-बार पेशाब की शिकायत होना.

डॉक्टर माधुरी वर्मा ने बताया-

"अक्सर माताओं और बहनों को ये समझ नही आता कि डॉक्टर के पास कब जाना चाहिए. वे डॉक्टर के पास जाने से थोड़ा डरती हैं. मेरे अनुभव से मैं यही कहना चाहूंगी कि यदि आपको लक्षण दिखाई देते है, यदि आपको पेल्विक दर्द है, मासिक धर्म में अनियमित और अधिक ब्लीडिंग होती है. या आपको व्यायाम या संभोग के बाद पेल्विक दर्द होता है, बार-बार उल्टी जैसा मन होता है और योनि में अनियमित दर्द होता है, तो निःसंकोच आपको एक अच्छे डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए और उचित उपचार समय पर करा लेना चाहिए."*ओवेरियन सिस्ट की जांच कैसे होती है?*• सिस्ट की जांच के लिए सबसे पहले USG WholeAbdomen यानी पूरे पेट का अल्ट्रासाउंड तकनीक से निरीक्षण किया जाता है.• अगर USG से यह पकड़ में नहीं आता तो CT Scan और MRI की मदद ली जाती है.

• गर्भ धारण की संभावना को देखते हुए प्रेग्नेंसी टेस्ट भी किया जा सकता है. जो उचित उपचार में सहायक है.• शरीर में एस्ट्रोजन और प्रोजेस्ट्रॉन की मात्रा की जांच करना जिससे हार्मोन इंबैलेंस का पता लगाया जा सके.• CA 125 टेस्ट जो ओवरी में कैंसर की आशंका का पता लगाने के लिए किया जाता है.

*ओवेरियन सिस्ट का इलाज कैसे होता है?*ओवेरियन सिस्ट का इलाज करने से पहले यह देखा जाता है कि ये सिस्ट शरीर के लिए कितना हानिकारक है और इसके बढ़ने की दर क्या है. यदि डॉक्टर विभिन्न जांच से इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि ये शरीर के लिए उतना हानिकारक नहीं है तो सामान्य दवाइयों से इन्हें ठीक करने का प्रयास किया जाता है. लेकिन यदि जांच में यह सामने आता है कि इस ओवेरियन सिस्ट से अंडाशय को खतरा है या ये शरीर और भविष्य में फर्टिलाइज होने वाले बच्चे के लिए खतरनाक है तो डॉक्टर इसे जल्द से जल्द ऑपरेशन के माध्यम से निकालने को कहते हैं.

ओवेरियन सिस्ट के ऑपरेशन के लिए डॉक्टर सामान्यतः लेप्रोस्कॉपी सर्जरी और लेप्रोटोमी सर्जरी का प्रयोग करते हैं. इसके जरिए नाभि के पास छोटा चीरा लगाकर सिस्ट को बाहर निकाल दिया जाता है. इसके अलावा सिस्ट एस्पिरेशन विधि का प्रयोग किया जाता है. इस विधि में योनि के रास्ते एक नलिका डालकर सिस्ट के अंदर के द्रव को बाहर निकाल लिया जाता है जिससे सिस्ट का ख़ात्मा हो जाता है. गर्भवती महिलाओं में यदि ओवेरियन सिस्ट पाया जाता है तो 5 महीने के गर्भ के बाद ही ऑपरेशन की सलाह दी जाती है लेकिन इसमें बच्चे को ख़तरा होता है.

डॉक्टर संजय सिंह ने कहा-
"हमारा पूरा प्रयास रहता है कि हम अंडाशय को किसी तरह बचा लें. अधिकांश स्थिति में हम अंडाशय को बचाने में कामयाब रहते हैं. पर यदि मरीज ने इलाज करवाने में लापरवाही की है या कोई बड़ी कॉम्प्लिकेशन है तो हमें अंडाशय को निकालना पड़ता है. इसलिए माताओं बहनों को घबराना नहीं चाहिए और लक्षण होने पर वे डॉक्टर को एक बार जरूर दिखा लें"
ओवेरियन सिस्ट की सम्भावना को कैसे कम किया जाए?• रोजाना योगाभ्यास और व्यायाम करने से मांसपेशियों में ब्लड सर्कुलेशन अच्छे से होता है जिससे मांसपेशियां स्वस्थ रहती हैं और सिस्ट के आसार कम होते हैं.• नियमित रूप से प्रोटीन युक्त भोजन, फाइबर युक्त फल और हरी सब्जियों के सेवन से हार्मोंस में स्थायित्व आता है, यह cyst से बचाव का अच्छा उपाय
\
है.• भरपूर मात्रा में पानी पीना चाहिए जिससे पाचन तंत्र ठीक रहता है जिसका अनुकूल प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है. इसके साथ ही यह विभिन्न बैक्टीरियल इन्फेक्शन से बचाव में भी सहायक होता है.*इलाज में लापरवाही न करें।*कई बार ओवेरियन सिस्ट काफी बढ़ जाने पर भी लक्षण उत्पन्न नहीं करता है इसलिए नियमित चेकअप करवाते रहना चाहिए. हिंदुस्तान टाइम्स में 17 मार्च 2011 को छपे एक लेख के अनुसार एक केस ऐसा भी सामने आया है जिसमें 71 वर्षीय महिला गिरिजम्मा के ओवरी में 15 kg का ओवेरियन सिस्ट पाया गया. बाद में अनुभवी डॉक्टरों द्वारा ऑपरेशन किया गया और सिस्ट का निवारण कर लिया गया. पीड़िता गिरिजम्मा ने बताया, "कुछ साल पहले, एक डॉक्टर ने मुझे बताया था कि मेरे अंडाशय में एक सिस्ट है, लेकिन मैंने कोई इलाज नहीं लिया क्योंकि कोई गंभीर दर्द या समस्या नहीं थी. जब मुझे दर्द हुआ कभी-कभी पेट भी फूल जाता था, मैंने इसे नजरअंदाज कर दिया क्योंकि यह हल्का था और मुझे समस्या की गंभीरता का एहसास नहीं हुआ, केवल जब दर्द बढ़ गया और यह लगातार बना रहा, तो मैंने डॉक्टर से सलाह ली." यदि पीड़िता ने पहले ही इलाज करवा लिया होता तो उन्हे इतनी तकलीफ नही सहनी पड़ती. यदि थोड़ी देर और हो जाती तो फिर न जाने क्या हो जाता.
यदि ओवेरियन सिस्ट का इलाज सही समय पर न हो तो पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम (पीसीओएस) होने का खतरा रहता है. पीसीओएस में अधिक संख्या में छोटे छोटे ओवेरियन सिस्ट बनते हैं जो आगे चलकर गंभीर समस्या बन सकते है. अगले संस्करण में हम इसके बारें में अधिक संक्षिप्त से जानेंगे.

असामयिक यौवन

| योगेश शर्मा |

इन दिनों कुछ ऐसे मामले सामने आ रहे है जिनसे यह पता चलता है कि बच्चियों में सामान्य समय से पहले यौवन की शुरुआत होने लगी है.पीरियड की सामान्य आयु 12 से 14 वर्ष मानी जाती है. कई बार 14 वर्ष की किशोरियां इसके प्रभाव को सहन नहीं कर पाती हैं.मसलन नवभारत टाइम्स में 28 मार्च 2024 को खबर लगी जो कह रही थी कि "पहला मासिक धर्म आने पर किशोरी नहीं सहन कर सकी दर्द, कर ली खुदकुशी". इसलिए जब बात छोटी बच्चियों की हो तो समाज को अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है. अतः आज गर्ल्स आर्मर मैगजीन के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि असामयिक यौवन(Precocious puberty) के आयाम क्या हैं और खासतौर पर जब बात छोटी बच्चियों की हो तो किस प्रकार वे इसकी वजह से शारीरिक और मानसिक रूप से प्रभावित होती हैं. असामयिक यौवन और चिकित्सा
असामयिक यौवन लड़कियों में 8 साल की आयु से पहले शुरू होता है. यौवन शुरू होने की सामान्य आयु 10 से 14 वर्ष है. बच्चियों में असामयिक यौवन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण लक्षण है, 8 वर्ष की आयु से पहले स्तनों का विकास. आमतौर पर स्तनों का विकास मासिक धर्म की शुरुआत से 1 से 2 वर्ष पहले शुरू होता है. इसके अलावा प्यूबिक हेयर यानी जननांग के आस पास बालों का जमना भी इस ओर इशारा करता है कि यौवन शुरू होने लगा है. अभी तक के शोधों से पता चला है कि ये लक्षण बच्चियों में सामान्यतः 10 से 14 वर्ष के बीच में शुरू होने चाहिए. इस तरह हम पहचान सकते है कि कहीं यौवन समय से पहले तो शुरू नहीं हो गया. यदि 8 वर्ष से पहले ये लक्षण दिखाई देना शुरू हो जाए तो एक बार डॉक्टर से सलाह अवश्य लेनी चाहिए.

असामयिक यौवन की एक वजह हार्मोनल असंतुलन हो सकती है.इसलिए डायग्नोस के लिए सबसे पहले ब्लड टेस्ट, हार्मोन लेवल और जरूरत पड़ने पर एक एक करके सभी अंगों की अल्ट्रासाउंड के माध्यम से जांच की जाती है. यदि हार्मोनल संतुलन बिगड़ गया हो तो कुछ दवाइयों और खानपान के माध्यम से उसे ठीक करने की कोशिश की जाती है लेकिन यह बच्चियों के सेक्सुअल विकास को प्रभावित कर सकता है.इसके अलावा विभिन्न अंगों की ग्रोथ रेट रिपोर्ट से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि शारीरिक बदलाव और असामयिक मासिक धर्म प्राकृतिक कारणों से हुआ है या इसकी वजह कुछ और है. सके उपचार के लिए हार्मोन थेरेपी का प्रयोग किया जाता है ताकि बच्चियों का विकास सामान्य समयानुसार हो सके.

असामयिक यौवन के प्रभाव

असामयिक यौवन, एक गंभीर समस्या है.इसके मुख्य कारण .प्रदूषण, पोषण और मानवीय विकास सिद्धांत हो सकते हैंवर्तमान में प्रदूषण और खानपान में मिलावट हार्मोनल संतुलन को बिगाड़ सकते हैं. खराब पोषण, प्रोसेस्ड फूड और विटामिन-मिनरल्स की कमी भी असामयिक यौवन को बढ़ावा दे सकती है.इससे बच्चियों को शारीरिक कमजोरी और आगे चलकर यौन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं.हार्मोन विभिन्न ऑर्गन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. इसलिए यदि समय से पहले बच्चियों में यौवन शुरू हो जाता है तो इससे शरीर का अंदरूनी अंग कमजोर हो जाते हैं. किडनी लीवर इंटेस्टाइन ओवरी आदि अंगों पर इसका प्रभाव पड़ता है.

लाइफस्टाइल के नजरिए से देखेंगे तो पाएंगे कि बच्चियों को पीरियड की वजह से विशेष प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है. स्कूल में बच्चियों के लिए कोई विशेष इंतजामात नही होते. बच्चियों को क्लास में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. लड़के उनका मजाक बनाएंगे इस डर से वे पीरियड का दर्द सहती रहती हैं.
हमने एक सर्वे किया जिसमे एक केस ऐसा सामने आया, सुनिए 9 वर्षीय कीर्ति की माता की जुबान से "मेरी बच्ची उस दिन स्कूल से आई तो बहुत परेशान थी. उसके कपड़े पर खून के दाग देखकर कुछ लडको ने उसे परेशान किया था.स्कूल से भी कोई सहायता नहीं मिली. स्कूल की परीक्षा में भी उसके लिए कुछ विशेष इंतजामात नही किए गए "

गंभीरता का पुनरावलोकन

1. स्वास्थ्य : असामयिक यौवन से बच्चियां शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में कमजोरी आती है तथा हार्मोनल असंतुलन से चिंता जैसी गंभीर समस्याएं होती हैं.

2. शारीरिक विकास: यह बाहर से तो बच्चियों को यौवन प्रदान कर देता है पर अंदर से उन्हें अत्यधिक कमज़ोर बनाता है. इसके लिए समय पर सही शिक्षा और असामयिक यौवन को मैनेज करने की शिक्षा देनी होगी.

3. प्रजनन स्वास्थ्य(Sexual and reproductive health): असामयिक यौवन से प्रजनन अंगों(REPRODUCTIVE ORGANS) का विकास समय से पहले होने लगता है, जिससे प्रजनन स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है. आगे चलकर गर्भ में पलने वाले बच्चे के स्वास्थ्य पर भी इसके नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं.

4. मानसिक स्वास्थ्य जल्दी यौवन से बच्चों में मानसिक तनाव, आत्मसम्मान की कमी और सामाजिक चुनौतियां .

उत्पन्न हो सकती हैं. इसके वजह से वे बहुत कम उम्र में सेक्स से परिचित हो जाते हैं. कम उम्र में सेक्स करने की वजह से बच्चियों को ऑर्गन फेलियर (failure) की समस्या हो सकती है

5. शिक्षा पर प्रभाव: यौवन के लक्षणों के कारण बच्चे स्कूल में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति पर असर पड़ता है. इससे जुड़ा कोई अच्छा पाठ्यक्रम भी नहीं है इसलिए भी यह एक गंभीर समस्या बन जाती है.

6. बाल विवाह: कुछ समाजों में यौवन को विवाह योग्य आयु माना जाता है, जिससे असामयिक यौवन बाल विवाह की समस्या को बढ़ावा दे सकता है. समाज को लगता है कि विवाह के लिए केवल बाहरी यौवन एक संकेत है.

7. सुविधाओं की कमी: बच्चियों के लिए विशेष व्यवस्था होनी चाहिए. जिसमें स्वास्थ्य सेवा सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो, पर इसको लेकर वर्तमान में कोई खास कदम नहीं उठाए गए हैं. बच्चियां इसके लिए अभिभावकों पर निर्भर हैं. इसके लिए सार्वजनिक सुविधाओं की व्यवस्था भी होनी चाहिए.

निष्कर्ष

असामयिक यौवन एक गंभीर समस्या है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. इसके प्रभाव को कम करने के लिए समय पर पहचान, जांच, और उचित चिकित्सा जरूरी है. अभी तक इसपर कोई खास शोध कार्य भी नहीं हुआ है.इसलिए कुछ भी स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता है. एक शोध हमे यह अवश्य बताता है कि पिछले 200 वर्षों में मासिक धर्म की औसत आयु में 3 से 4 वर्ष की गिरावट देखने को मिली है. इस लिहाज से भी यह शोध का विषय है कि कहीं असामयिक यौवन इवोल्यूशन की प्रक्रिया का एक नमूना तो नहीं है. ऐसे ही महत्वपूर्ण विषयों पर हम आगे भी बातचीत करते रहेंगे. इसपर आपके क्या विचार हैं, हमे फीडबैक के माध्यम से अवश्य बताएं.

पैड वितरण अभियान

गर्ल्स आर्मर

आइए दुनिया बदलें

सुझाव

हमें सुझाव देने के लिए स्कैन करें

हमारी पत्रिका के माध्यम से हम लोगों को महिलाओं के सामने आने वाली हर समस्या के बारे में जागरूक करने की कोशिश कर रहे है और हम आशा करते हैं कि यह एक सरल काम नहीं है, इसके लिए बहुत धैर्य, कड़ी मेहनत और साहस की आवश्यकता होती है लेकिन हम अभी भी इसे कर रहे हैं क्योंकि यह हमारा जुनून है। हम सुधार में विश्वास करते हैं क्योंकि लोग हमेशा एक-एक चीज से सीखते हैं। इसलिए हम आपके मूल्यवान सुझाव के माध्यम से हमारी सहायता करने के लिए यह QR कोड दे रहे हैं। और हमे बताए की हम अपने आप को और अच्छा कैसे कर सकते है।

आपके लिए अवसर

आपके पास निम्नलिखित विषयों पर एक लेख लिखने का अवसर है, हम आपके सभी लेख पढ़ते हैं और फिर उनमें से सर्वश्रेष्ठ लेखों में से एक का चयन करते हैं और हम निश्चित रूप से आपके नाम का उल्लेख करेगे। हमें लगता है कि गर्ल्स आर्मर पत्रिका में अपना नाम देखना आपके लिए सम्मान की बात है।

विषय

सेहत

- माहवारी मे देरी
- अंडाशयी कैंसर
- एच.ई.वी
- थाइरोइड

समाजिक मुद्दे

- दहेज प्रथा
- घरेलू हिंसा
- बाल विवाह
- लैंगिक असमानता

प्रेरणा स्रोत कहानी

- स्त्री केंद्रित
- स्थानीय कहानी
- जो आपकी प्रेरणा स्रोत हो
- महिला सशक्तिकरण

अन्य

- स्वास्थ्य
- फैशन
- सुंदरता
- आधुनिक सुरक्षा उपकरण

यदि आप इन विषयों पर अपना लेख प्रकाशित करवाना चाहते हैं, जिनका उल्लेख गर्ल्स आर्मर की पत्रिका में होता हैं, तो आप हमें गर्ल्स आर्मर की आधिकारिक ईमेल आईडी पर अपना लेख मेल कर सकते है।

girlsarmour@gmail.com

गर्ल्स आर्मर की पहल

नन्हीं खोज

लड़कियों की शिक्षा के लिए खोज

"शिक्षा को सुलभ बनाने की प्रतिबद्धता के साथ, हम 'नन्ही खोज' पहल शुरू कर रहे हैं - एक कार्यक्रम जिसका उद्देश्य वंचित लड़कियों के लिए मुफ्त शिक्षा के दृष्टिकोण को साकार करना है। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि हर लड़की को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार हो, चाहे कुछ भी हो उसकी पृष्ठभूमि। आपका समर्थन इस सपने को वास्तविकता में बदलने में मदद करेगा। आपका योगदान एक लड़की के जीवन में प्रकाश की किरण होगा, न केवल उसके भविष्य को बल्कि हमारे समाज को भी आकार देगा। आइए एक साथ आएं, इस अद्भुत यात्रा का हिस्सा बनें और बनाएं इन लड़कियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य।"

GIRLSARMOUR@GMAIL.COM पर सुझाव भेजें